बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-116 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | दिसंबर 2023 | मूल्य - 5 रूपए

नेतृत्व प्रशिक्षण आधारित कार्यशाला में

सड़क और कामकाजी बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए

रिपोर्टर हंसराज, सरिता, किशन

दिनांक 29 नवंबर से 3 दिसंबर तक बोध शिक्षा समिति जयपुर में चेतना संस्था द्वारा आयोजित सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए आवासीय कार्यशाला में जयपुर, दिल्ली एवं गुरुग्राम के बच्चों ने भागीदारी ली। इस पांच दिवसीय कार्यशाला में बच्चों ने लीडर के गुण, बाल अधिकार और बच्चों से संबंधित कानूनों के बारे में जाना। तो आइए अब विस्तृत रूप से जानते हैं कि इस कार्यशाला के दौरान बच्चों ने क्या-क्या किया? सबसे पहले बच्चों ने कार्यशाला में रहने के नियम बनाए और उसके बाद 6 कमेटी भी बनाई गई जैसे साफ-सफाई कमेटी, खान-पान कमेटी, स्वास्थ्य कमेटी, मनोरंजन कमेटी, अनुशासन कमेटी एवं समय पालक कमेटी तत्पश्चात सभी कमेटी को अलग-अलग काम दिया गया जिसमें बच्चे और चेतना संस्था के कार्यकर्ता भी मौजूद रहे। इसके अलावा सड़क एवं कामकाजी बच्चों की वर्तमान स्थिति पर भी बात की गई। बच्चों को इस दौरान चार समूहों में विभाजित किया गया जिसमें बच्चों को अलग-अलग टास्क दिया गया जैसे पहला ग्रुप मोनो एक्टिंग करके बच्चों की स्थिति को बताए। इसी प्रकार दूसरा समूह नाटक के माध्यम से बोलकर बच्चों की स्थिति को बताए। तीसरा ग्रुप कोलाज के माध्यम से बताए एवं अंतिम चौथा समूह ड्राइंग के माध्यम से बच्चों की वर्तमान स्थिति को बताए। इस दौरान बच्चों को कई तरह-तरह के खेल भी खिलाए गए जैसे कितने भाई कितने, नेता-नेता चाल बदल, बोल से गिलास को गिराना, आंख बंद करके रस्सी को पार करना आदि और शाम को बच्चों से संबंधित विभिन्न प्रकार की मनोरंजनात्मक गतिविधियां भी आयोजित हुई और इस तरह मनोरंजन के बाद बच्चे अपने रूम में जाकर सो जाते। वास्तव में यह सारी गतिविधियां कार्यशाला का ही महत्वपूर्ण भाग थी जिसके अंतर्गत इन सभी बच्चों को कार्यशाला के अंतिम दिन से एक दिन पूर्व होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में इन्हें प्रदर्शित करना था। इन गतिविधियों से उन्होंने जो कुछ भी सीखा उन सभी बातों को व्यवहार में लाकर तथा यथोचित तरीके से सीख कर खुले मंच पर अपनी प्रस्तुति देनी थी जो की भली भांति संपन्न भी हुआ। दिल्ली की बस्ती में रहने वाली बालिका मंतंशा ने बताया कि जब मैं जयपुर गई तो मैंने वहां पर लीडर के गुण सीखें पर जब मैं कांटेक्ट पॉइंट पर रोज पढ़ने आती थी तो तब भी मैं लीडर के गुण जाने थे पर जयपुर में जाकर मैंने काफी अच्छे से बच्चों के लीडर के गुण जाने की एक लीडर में क्या-क्या खासियत होनी चाहिए? जैसे एक लीडर पढ़ा लिखा होना चाहिए, बहादुर होना चाहिए, इज्जत करने वाला होना चाहिए, नशा नहीं करना चाहिए, सहनशीलता रखने वाला आदि। जयपुर में जाने से पहले मैं अपने छोटे एवं बड़े बच्चों के साथ कभी-कभी कुछ छोटे-मोटे अपशब्द प्रयोग कर लिया करती थी और हर किसी से हर एक बात पर नाराज हो जाती थी पर अब मैंने वह आदत सुधार ली है अब मैं एक अच्छी लीडर बन

गई हूं। जयपुर में रहने वाली फरीन ने बताया जब जयपुर में मैं जब एक रस्सी वाला खेल खेला तो उस खेल में मेरी जब आंख बंद कर दी गई थी और रस्सी हटा दी गई थी फिर कई लोग मुझे गलत दिशा दिखा रहे थे कि उल्टा जा, सीधा जा, पर वहां पर रस्सी ही नहीं थी इससे मैंने सीखा की जीवन में परेशानियां बहुत आती है पर उनका सामना हमें डटकर करना चाहिए हमें डरना नहीं चाहिए। अब मैं किसी की भी बातों पर विश्वास नहीं करती यदि मेरी बस्ती में कोई भी दुर्घटना होती है तो मैं जब तक अपनी आंखों से नहीं देख लेती तब तक मैं यकीन नहीं मानती। गुड़गांव में रह रहे आसिफ ने बताया की मैंने जयपुर में जाकर यह सीखा की बच्चों की वर्तमान स्थिति किसे कहते हैं और उसको जानना क्यों जरूरी है? जब मेरे यहां पर बालकनामा के लिखावट पत्रकार आते थे तो वह मीटिंग के दौरान हमसे बच्चों की वर्तमान स्थिति के बारे में पूछते थे पर हमें यही नहीं पता था कि वर्तमान स्थिति किसे कहते हैं जब हम जयपुर पहुंचे तो वर्तमान स्थिति पर भी बात हुई और वर्तमान स्थिति किसे कहते हैं यह भी जाना जैसे अपने आसपास में होने वाले वर्तमान में कार्य को वर्तमान स्थिति कहते हैं और यह जरूरी भी है क्योंकि हमें पता होना चाहिए कि हमारे आसपास में क्या चल रहा है। जब हमारे यहां रिपोर्टर आते थे तो हम अपने आसपास के बच्चों की वर्तमान स्थिति को नहीं बता पाए थे परन्तु अब जयपुर की कार्यशाला के बाद अब पत्रकार जब भी मीटिंग करने आते हैं तो मैं अपने आसपास में हमेशा ध्यान रखता हूं कि बच्चे क्या कर रहे हैं और वह मीटिंग में मैं जल्दी से बता देता हूं। दिल्ली में रहने वाला निहाल ने बताया मैं जब अपने झुग्गी बस्ती में रहा करता था तो मैं सोचता था कि मुझे कभी भी किसी बड़े मंच या स्टेज पर जाने का मौका नहीं मिला परंतु जब मैं चेतना संस्था के द्वारा कार्यशाला के लिए गया तो वहां पर जब अंतिम दिन में प्रतियोगिता हुई तो उस प्रतियोगिता में हम बच्चों को स्टेज पर बुलाया था वह मेरा स्टेज पर जाना पहली बार था और मैं इससे पहले कभी भी स्टेज पर नहीं गया था और जब मैं वहां पर पहुंचा तो मुझे डर लग रहा था और कुछ देर तक खड़ा रहा तो मेरा डर भाग गया और मैंने सवाल के जवाब अच्छे से दिए। खुशी की बात यह है कि जब मैं घर आ गया तो जब मैं स्कूल गया तो एक दिन मुझे और स्कूल के सभी बच्चों को स्कूल में नशे से संबंधित एक फिल्म दिखा रहे थे फिर उस फिल्म के खत्म होने के बाद कई सवाल भी पूछे गए जिसके प्रति उत्तर में किसी भी बच्चे ने कोई जवाब नहीं दिया फिर अंततः मैंने जवाब दिया और इसके बदले मुझे वहां से ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ ज्योमेट्री बॉक्स, पेंसिल एवं कॉपी पुरस्कार के रूप में मिली जिसे पाकर मुझे बेहद खुशी हुई। इस घटना में आकर्षक बात यह है कि यह पुरस्कार मुझे स्कूल के स्टेज पर जाकर मिला और स्टेज का डर तो मेरे दिल से कार्यशाला के दौरान ही निकल चुका था तो इस बार मुझे स्टेज पर जाकर काफी गर्व महसूस हुआ। इसके बाद गुड़गांव में रह रहे 12 वर्षीय बादशाह से जाना की उन्हें जयपुर में क्या अच्छा लगा और उन्होंने क्या सीखा? तो बादशाह ने बताया कि मैं वर्तमान में स्कूल नहीं जाता हूं, मैं भैया के पास पढ़ने के लिए आता हूं और एक बार मैंने भैया से बच्चों के अधिकारों के बारे में जाना था की बच्चों के अधिकार कितने होते हैं पर उसके अंदर क्या-क्या आता है वह जानने ही वाला था फिर घर से कुछ जरूरी बुलावा आ गया जिस कारण में घर पर चला गया और मैं विस्तार से अधिकारों के बारे में नहीं जान पाया। कुछ दिन बाद जब मैं जयपुर गया तो मैं वहां पर बच्चों के कितने अधिकार होते हैं और कौन-कौन से होते हैं वह अधिकार अच्छे से जाने जैसे पहला अधिकार जीने का अधिकार दूसरा सुरक्षा का अधिकार, तीसरा विकास का अधिकार, चौथा भागीदारी का अधिकार। यह अधिकार जानने के बाद मुझे काफी खुशी हुई और मुझे यह पता चला कि बच्चों के भी अधिकार होते हैं जिसे हम मांग सकते हैं। दिल्ली के शिवाजी पार्क की बस्ती में रहने वाले राम जी ने बताया कि जब मैं जयपुर गया तो मैंने काफी कुछ सीखा पर दरअसल बात ये है की जब हम अपनी बस्ती में रहते हैं तो हमारी बस्ती में शौचालय की कोई सुविधा नहीं है चाहे वह बड़ा व्यक्ति हो या बच्चा सभी को खुले में शौच करने के लिए जाना पड़ता है और परिणामतः काफी बदबू और काफी गंदगी का सामना करना पड़ता है और हमारे गांव में भी शौचालय नहीं है इसलिए हम गांव में भी खुले में शौच करने के लिए जाते हैं पर जब मैं जयपुर कार्यशाला में गया तो हमें वहां अलग कमरा मिला और उसमे बाथरूम भी था। जीवन में मैंने कभी ऐसे शौच नहीं किया था, जब मैं शौच करने के लिए बाथरूम जाता तो मुझे काफी खुशी होती और गेट बंद करके पूरी सुरक्षा के साथ हम शौच कर पा रहे थे। इसके अलावा कार्यशाला में मुझे काफी अच्छा लगा और मजा भी आया, जयपुर में हुए सभी कार्य मुझे जीवन भर याद रहेंगे।

शिक्षा का महत्वः क्या उर्दू पढ़ने से हो सकता है सम्पूर्ण ज्ञान का सफर?

बालकनामा रिपोर्टर झहंस कुमार

एक 10 वर्षीय बालक सलमान (परिवर्तित नाम) जिसके पिता लखनऊ में एक श्रमिक है और मजदूरी करते हैं तथा बालक की माता घरों में झाड़ू-पोछा व साफ-सफाई का कार्य करती है। इसके अलावा बालक की एक बड़ी बहन भी है वह भी आसपास के घरों में झाड़ू-पोछा एवं बर्तन धोने का काम करती है। बालक के पिता को मजदूरी के सिलसिले में घर से बाहर लखनऊ में रहना पड़ता है और घर पर माता का स्वास्थ्य भी अधिकतर ठीक नहीं रहता जिसके कारण अभिभावक सलमान पर ध्यान नहीं दे पाए और बालक बुरी सोहबत में पड़कर विद्यालय जाना कम कर देता है परिणामतः बालक के अभिभावक सलमान कि इस लापरवाही के कारण नाराज होकर अपने नजदीकी मदरसे में उसे भेजना आरंभ कर देते हैं और चाहते हैं कि वह मदरसे

में ही पढ़े और केवल उर्दू की तालीम ही ग्रहण करे।

इस प्रकार जब संबंधित विद्यालय के शिक्षकों ने बालक की बड़ी बहन फिरोजा (परिवर्तित नाम) से सलमान के विद्यालय नहीं आने का कारण पूछा तब बालिका ने कुछ ना कुछ बहाने बताकर बात को टाल दिया परंतु जब लगातार शिक्षकों द्वारा बालिका से सख्ती से पूछा गया तो फिरोजा को सबको सच बताना ही पड़ा और इस प्रकार वहां के कुछ बच्चों द्वारा बालक नाम रिपोर्टर हंस कुमार को पता चला की उक्त बालक का विद्यालय में दाखिला बड़ी परेशानियों का सामना करने के बाद कक्षा पांचवी में हुआ था परंतु फिर भी बालक को विद्यालय से निकालकर उर्दू पढ़ने के लिए मदरसा भेज रहे हैं पर प्रश्न तो यही उठता है कि क्या केवल उर्दू पढ़कर हम सम्पूर्ण शिक्षा का महत्व जान सकते हैं?

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चे का स्कूल जाते समय हुआ अपहरण

सुरक्षा में और सड़कों पर नजर बनाए रखना जरूरी

बातूनी रिपोर्टर बबलू और बालक नामा रिपोर्टर हंस कुमार

हमारे सभ्य समाज में बच्चों का अपहरण कोई नई बात नहीं है अक्सर हम ऐसी बातें सुनते ही रहते हैं। इस बार यह घटना शहीद कैंप में रहने वाले एक बालक की है जो की रोज की तरह स्कूल जाने के लिए नजदीकी ट्रैफिक लाइट के पास ई-रिक्शा का इंतजार कर रहा था तभी कुछ लोग वैन से आए और उस बच्चे को उठाकर वैन में जबरदस्ती डालने लगे जब बच्चे ने हाथ-पैर पटक कर उनके चंगुल से भागने की भरसक कोशिश की तब उन लोगों ने बालक को बेहोशी की दवा देने का प्रयास किया और इस प्रकार उसे दबोच कर वैन में डाल दिया। इस पूरे घटनाक्रम को दूर खड़ी एक महिला ने जब देखा तो वह जोर-जोर से शोर मचाने लगी इस पर नाराज होकर उन अज्ञात बदमाशों ने उस महिला को भी नहीं बख्शा और उसे भी चोट पहुंचा कर वहां से रफू चक्कर हो गए। बातूनी रिपोर्टर बबलू ने बताया की यह बालक उनकी माता-पिता की इकलौती संतान है और इस पूरी घटना का बालक के माता-पिता पर गहरा सदमा पहुंचा है वे दोनों बेहद दुखी हैं।

लालच ने छीनी शिक्षा की अवसरों की राह

पैसों की चपेट में मां-बाप ने किया बच्चों को शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर-हंस कुमार

रोहन (परिवर्तित नाम) शिवाजी पार्क का रहने वाला है उसके पिता नशा करने के आदी हैं और इसी कारण नशा करके हमेशा घर पर ही रहते हैं। बालक के पिता चाहते हैं कि रोहन और उसका बड़ा भाई दोनों काम करें और पैसे कमाए ताकि उन्हें काम न करना पड़े। जहां एक तरफ बालक का बड़ा भाई कोठियों या घरों के आसपास से कचरा- पन्नी बीन कर तथा उन्हें बेचकर कुछ कमाई कर लेता है और घर वालों को घर खर्च में बिल्कुल सहयोग नहीं करता वरन उनसे लड़ाई करता है वहीं दूसरी ओर बालक रोहन भी कबाड़ बीन कर कुछ कमा लेता है और अपनी माता को घर खर्च में सहयोग करता है परंतु उसके पिता बालक की माता से लड़ाई-झगड़ा या चोरी करके पैसा छीन लेते हैं और उससे शराब पीकर नशा करते हैं।

इस कारण घर की स्थिति और दयनीय हो जाती है अंततः बालक की माँ को किसी से ऋण लेकर अपने घर के खर्चों को वहन करना पड़ता है।

बालक रोहन की पढ़ने में काफी रुचि है और वह चाहता है कि उसका दाखिला आसपास के किसी विद्यालय में हो जाए और उसकी माता भी यही चाहती है परंतु उसके पिता उसका दाखिला नहीं होने देते हैं और बालक को जबरदस्ती कबाड़ बीनने या अन्य प्रकार के कामों में संलग्न होना पड़ता है। इस प्रकार बालक रोहन अपने छोटे भाई-बहनों और परिवार के खर्चों में सहयोग करता है परंतु उसके पिता अपनी नशे की बुरी आदत से बाहर नहीं आते और उसे कूड़ा बीनने के लिए मजबूर होना पड़ता है, इस प्रकार बालक अपने अभिभावकों के पैसों की लालच का शिकार होते हुए शिक्षा से कई कोसों दूर खड़ा है।

नशे की आड़ में बच्चे चुन रहे चोरी का रास्ता

बातूनी रिपोर्टर- अंजली व रिपोर्ट बालकनामा रिपोर्टर-हंस कुमार

आप लोगों ने देखा ही होगा की कुछ बच्चे अपनी निजी जरूरतों को पूरा करने के लिए चोरी का गलत रास्ता अपना लेते हैं, ऐसे ही शहीद कैंप की बातूनी रिपोर्टर अंजली ने बताया कि हमारे यहां कुछ बच्चे समूह बनाकर घरों के आसपास की दुकानों से पैसे एवं सामान चोरी करते हैं। बकौल अंजली ने बताया कि हाल ही में वे बच्चे तीन-चार दिन पहले एक दुकान से दो हजार रुपए चोरी करते हुए पकड़े गए हैं पर उस समय लोगों ने बच्चा समझ कर

उन्हें माफ कर दिया फिर भी बच्चे अपनी इन हरकतों से बाज नहीं आते हैं और चोरी करते हैं। बातूनी रिपोर्टर अंजली जब बात की तह तक गई तो पता चला कि ये बच्चे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि यह सभी बच्चे किसी ने किसी प्रकार के छोटे-मोटे नशे के आदी हैं और यह इस प्रकार चोरी किए गए पैसों से नशा करते हैं, वैसे तो अमूमन इन्हें घर से पैसे प्राप्त नहीं होते परंतु यदि यदा-कदा घर वालों से पैसे मिल भी जाएं तो भी यह उन पैसों से नशीले पदार्थ को खरीद कर उनका सेवन करते हैं। बच्चों द्वारा बताया गया कि उनके समूह के लीडर का नाम श्याम (परिवर्तित नाम) है और वह ही इस प्रकार के नशीले पदार्थों का प्रबंध कर स्वयं सेवन करता है तथा समूह के अन्य बच्चों खासकर जो विद्यालय नहीं जाते हैं या यहां-वहां घूमते रहते हैं उन्हें भी नशा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अब तो आलम यह है की इन बच्चों को लगातार गुटखा-तंबाकू खाने की आदत लग चुकी है और ये गुटखा खाकर लड़कियों पर थूक कर उनका मजाक भी उड़ाते हैं और यदि बच्चों के अभिभावक उन्हें नशा करने के लिए मना करते हैं तो बच्चे अपने माता-पिता के इस व्यवहार का विरोध करते हैं और उनसे लड़ाई-झगड़ा करने लगते हैं।

कर्ज चुकाने के लिए बच्ची को काम पर धकेलना: शिक्षा को कड़ी मुश्किल में डालने की चुनौती

ब्यूरो रिपोर्ट

शकूरबस्ती में रहने वाली 9 वर्षीय काजल (परिवर्तित नाम) जो पहले अपने घर में ही रहकर काम करती थी फिर चेतना एनजीओ के वैकल्पिक शिक्षण केंद्र पर पढ़ने आने लगी। वहां चेतना संस्था के कार्यकताओं द्वारा काजल का दाखिला विद्यालय में करवा दिया गया और इस प्रकार काजल रोज विद्यालय जाने लगी। काजल के माता-पिता ने उसे कुछ महीनो तक तो स्कूल जाने दिया और फिर इसी दौरान काजल की बड़ी बहन की शादी तय हो गई। काजल ने इसी बाबत अपने विद्यालय से अवकाश ले लिया और अपनी बहन की शादी में चली गई, वहां जाकर पता चला कि काजल की माँ ने अपने भाई यानी काजल के मामा से पहले ही काफी कर्ज लिया हुआ है और अब

बहन की शादी में फिर से कर्ज ले लिया है। फिर क्या था जैसे-तैसे शादी संपन्न हुई उसके पश्चात काजल के मामा ने काजल की माँ से अपने पैसे मांगने शुरू कर दिए, काजल की बेबस माँ ने कहा भाई! अभी तो मेरे पास कर्ज चुकाने के लिए पैसे नहीं है क्योंकि अभी-अभी मैंने अपनी बड़ी बेटी की शादी की है तो आप कुछ दिन रुक जाओ। इस पर काजल के मामा ने कहा कि हम सभी कोठियों में काम करते हैं आप बोलो तो हम कर्ज तुड़वाने के लिए काजल को वहीं पर दिन-रात काम पर लगा देते हैं। काजल की माँ ने कुछ देर सोचने के बाद बोला यदि काजल को समय पर पैसे मिल जाएंगे तो ठीक है, प्रतिउत्तर में काजल के मामा कहा कि पैसे समय से मिल जाया करेंगे। तो इस प्रकार काजल की माँ ने काजल को अपने मामा के साथ भेज दिया जिसका विपरीत परिणाम यह हुआ की काजल का विद्यालय छूट गया और अब वह कर्ज.तुड़वाने के लिए दिन-रात कोठियां में काम करती है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

झुग्गियों का किराया कम होता है इसलिए बस्तियों में रहना हमारी मजबूरी

बातूनी रिपोर्टर राजा व रिपोर्टर किशन

गुड़गांव की 400 झुग्गीयों में दौरा करने के उद्देश्य से बालकनामा के पत्रकार जब वहां पहुंचे तो झुग्गी में रहने वाले एक 13 वर्षीय बालक ने अपना परिचय देकर बस्ती में होने वाली समस्याओं को इंगित करते हुए बताया की मैं रोजाना चौथी कक्षा में पढ़ने के लिए स्कूल जाता हूं और स्कूल से आने के बाद चेतना संस्था के एजुकेशन क्लब पर भी पढ़ने के लिए जाता हूं। हमारे माता-पिता बेलदारी का काम करने के लिए जाते हैं और जो पैसा कामकाज करके कमाते है उन्हीं पैसों से हमारे घर का खर्चा चलता है।

हम यहाँ इन झुग्गी बस्तियों में रहते हैं और यहां पर एक सबसे बड़ी समस्या यह है की जो इस बस्ती का ठेकेदार है उस ठेकेदार का व्यवहार हमारे प्रति काफी खराब है। इस बस्ती में लगभग 400 परिवार रहते हैं और सभी तरह-तरह का कामकाज करने के लिए जाते हैं परन्तु जितने भी परिवार बस्ती में रहते हैं सबका यही कारण है कि झुग्गी बस्ती का किराया कम लगता है हम किराए के कमरे की बात करें तो कमरे का किराया लगभग 4000 से 5000 रुपये प्रति महीना में मिलता है और झुग्गी हमें 2000 से 2500 रुपये प्रति महीना में मिल जाती है इसी कारण हम झुग्गी बस्ती में रहते हैं इस बस्ती का जो ठेकेदार है उसका व व्यवहार काफी खराब है वह अधिकतर लोगों के पास जब महीने पर किराया लेने के लिए जाता है तो वह अपशब्द का प्रयोग करता है और बार-बार झुग्गी खाली करने की धमकी देता है अंततः मजबूरन लोगों को उसकी बातों को सुनना पड़ता है पर एक बार ऐसे ही हमारे साथ भी हुआ एक दिन वह काफी अपशब्द का प्रयोग करने लगा और घर का सामान तक उठाकर बाहर फेंकने लगा तो हमारे पिताजी को ये बर्दाश्त ना हुआ और पिताजी ने पुलिस में भी शिकायत दर्ज कर दी परन्तु शिकायत दर्ज करवाने के बाद भी वह कुछ ही घंटे में छूट कर आ गया और अब भी वह नहीं सुधरा है और अक्सर ऐसी हरकतें लोगों के साथ करता है।

छोटे भाई-बहन की देखभाल ने पढ़ाई को किया प्रभावित

बच्चों को स्कूल न जा पाने का सामना करना पड़ रहा

बातूनी रिपोर्टर - लक्ष्मी,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

शिवाजी पार्क में रहने वाली प्रिया (परिवर्तित नाम) जो लगभग 9 वर्ष की है और चौथी कक्षा में पढ़ाई करती है परंतु वर्तमान में विद्यालय नहीं जा पा रही है। वैसे उक्त बालिका का विद्यालय में दाखिला बड़ी ही मशक्कत के बाद हुआ है, इससे पहले वह अपने माता-पिता के साथ कूड़ा बीनने के लिए जाया करती थी किंतु चेतना संस्था के संपर्क में आने के पश्चात चेतना के कार्यकताओं द्वारा बालिका का दाखिला कक्षा चौथी में हो गया परंतु अब विद्यालय में परीक्षा शुरू होने के पहले ही उसकी माता की तबीयत खराब हो गई और पिता शराब पीने की आदत के कारण परिवार पर ध्यान नहीं देते। बालिका के घर में दो छोटे भाई बहन भी हैं जिसके लिए बालिका के अभिभावकों ने सख्त चेतावनी दी है कि वह विद्यालय न जाए बल्कि घर में रहकर इन भाई-बहन का ख्याल रखें। बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी ने बताया कि वहां एक और बालिका जिसका नाम अंकिता (परिवर्तित नाम) है वह भी इस बार स्कूल में परीक्षा नहीं दे पाई क्योंकि उसके घर में भी एक छोटा बच्चा है और उसके माता-पिता उसे विद्यालय ना भेजकर अपने छोटे भाई का ध्यान रखने के लिए कहते हैं, इस प्रकार की घटनाएं सदैव मन को विचलित करती हैं साथ ही साथ बच्चों को विद्यालयों से दूर रहने पर मजबूर करती है।

बच्चे साइकिल सॉल्यूशन ट्यूब से कर रहे हैं नशे का सेवन

बालकनामा रिपोर्टरः शबीर
बातूनी रिपोर्टरः आदिल

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की एक कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों को बालकनामा अखबार के बारे में बताया तभी बातूनी रिपोर्टर आदिल ने बताया कि हमारी बस्ती में कुछ बच्चे नशा करते है। जब रिपोर्टर ने विस्तृत रूप से पूछा की बच्चे क्यों और किस प्रकार का नशा करते हैं? तब आदिल ने बताया की मेरे घर के पास में दो बच्चे रहते है और उनके परिवार की आर्थिक स्थिती ठीक नही होने के कारण साइकिल की दुकान पर पंचर बनाने का काम करते हैं। इस काम को करते-करते उनको टायर में पंचर बनाने वाली सोल्यूशन ट्यूब को एक कपड़े में लपेटकर सूंघने की आदत हो गई है अर्थात इन बच्चों को सॉल्यूशन ट्यूब से नशा करने की आदत हो गई हालांकि उनकी इस आदत को छुड़ाने के लिए घर वाले बहुत कोशिश करते हैं लेकिन वह घर वालों से छुपकर नशा करते हैं। विचारणीय बात है, न जाने कितनी ही जगह टायर में पंचर बनाने वाली सोल्यूशन ट्यूब को बच्चे नशे की सामग्री के तौर पर इस्तेमाल कर रहे होगें?

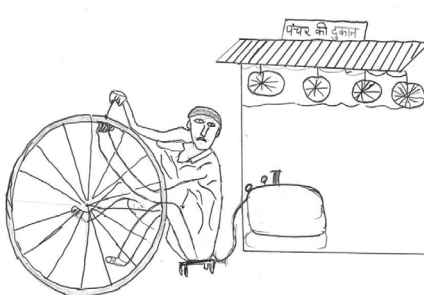

अफसोसनाक हादसा
रोडवे पर पटाखों की गाड़ियों पर हमला, कई कामकाजी बच्चों को लगी चोटें

बातूनी रिपोर्टर- यासीर व
बालकनामा रिपोर्टर-हंस कुमार

शकूरबस्ती के बातूनी रिपोर्टर यासिर ने बताया की दिवाली के कुछ दिन पहले से ही वहां के बच्चों में पटाखों को लेकर एक अलग सा रुझान है जिसके चलते वे जहां मर्जी हो वहीं पर पटाखे फोड़ने लग जाते हैं। ऐसे ही एक दिन एक वैन गाड़ी रास्ते से जा रही थी और कुछ शरारती बच्चे वहां पर पटाखे फोड़ रहे थे और इसी दौरान एक बच्चे ने एक पटाखा जलाकर वैन के अंदर फेंक दिया जहां उस वैन में कुछ बच्चे बैठे हुए थे, इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि पटाखों की वजह से उन बच्चों के कपड़े जल गए और वो घायल हो गए। मामले की गंभीरता को समझते हुए जो बच्चे वहां पटाखे फोड़ रहे थे तुरंत आनन-फानन में वहां से नौ दो ग्यारह हो गए। रिपोर्टर ने बताया कि उन तीन-चार बच्चों ने मिलकर अपना समूह बना रखा है और अक्सर वे ऐसी हरकतें करते रहते हैं साथ ही साथ बस्ती में लड़ाई-झगड़ा एवं मारपीट भी करते हैं। यासिर ने दुखी मन से बताया कि उन पटाखों से घायल हुए बच्चों में उसका भी एक भाई था जिसके हाथ और पर दोनों में चोट आई है और वह काफी हद तक जल गए हैं । इस वजह से उन सभी बच्चों को विद्यालय जाने में काफी तकलीफ हो रही है जिसके परिणाम स्वरूप उनके अभिभावकों ने भी उन्हें विद्यालय जाने से मना कर दिया है। आखिरकार उक्त बच्चों की पढ़ाई छूट गई है, बच्चे अब ना तो ठीक से खेल पाते हैं और ना ही ठीक से पढ़ पाते हैं अतः बच्चों का कहीं आना-जाना भी बंद हो गया है,अब सभी बच्चे इस बात से चिंतित हैं की वो बिना पढ़ाई के आगामी परीक्षा में उत्तीर्ण कैसे हो पाएंगे ?

खेल-खेल का मजा बना बच्चों के लिए सजा

जिम्मेदारी और मनोरंजन को संतुलित रखना आवश्यक

बातूनी रिपोर्टर-यासीर और
बालकनामा रिपोर्टर- हंस कुमार

अरमान (परिवर्तित नाम) जो 9 साल का है और शकूर बस्ती का रहने वाला है वो वहीं पर रहकर रोजाना बकरियाँ चराता है। रोजाना की ही तरह वह एक दिन बकरियों को चराने अपने कुछ साथियों के साथ नजदीकी ट्रेन सर्विस सेंटर जा पहुंचा, जहां पर काफी मात्रा में बकरियों के चरने के लिए अच्छी घास एवं पेड़ पौधे हैं। जब वे सभी वहाँ जाकर बकरियों को चराते-चराते ऊब गये तो उनके दिमाग में खुराफात आई और उन्होंने आपस में यह निश्चित किया कि वे पकड़म-पकड़ाई खेल खेलेंगे और इस प्रकार वे सभी एक के बाद एक विभिन्न प्रकार के खेल खेलने लगे। इसी बीच उन्होंने कुश्ती खेलने भी आरंभ कर दिया बालक अरमान जो शुरूआती दौर में कई बार जीत गया था उसने उसके कई दोस्त जो क्रमशः 13, 14, 15 और 16 साल के थे उनके साथ कुश्ती का मुकाबला किया जिसमें उन सभी दोस्तों ने मिलकर बालक अरमान को पछाड़ दिया जिसके फलस्वरुप अरमान से यह बर्दाश्त नहीं हुआ और उसके हाथ की हड्डी टूट गई। जब बालक को डॉक्टर को दिखाया गया तो डॉक्टर ने बताया की बालक के हाथ को पुनः यथावत ठीक होने में दो से तीन वर्ष का समय लगेगा, इस प्रकार बच्चों का खेल का मजा थोड़ी ही देर बाद सजा में बदल गया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खाने के लिए बच्चे हुए भीख मांगने को मजबूर

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

बालकनामा रिपोर्टर ने वाल्मीकि कैंप जाते हुए रास्ते में देखा कि एक बच्चा गाड़ियों के पीछे दौड़कर सभी से भीख मांग रहा है फिर देखा कि अचानक वह बच्चा दौड़ते-दौड़ते थक गया और सड़क के किनारे बैठ गया। इस पर हमारे बालकनामा रिपोर्टर हंसराज से रहा न गया और वे भी उस बच्चे के पास जाकर बैठ गए, यह देखकर वह बालक थोड़ा असहज होकर डर गया और भागने लगा तो रिपोर्टर ने उसे समझाया कि वह बालकनामा के रिपोर्टर हैं तब जाकर वह बच्चा उनके पास आया। रिपोर्टर ने जब उस बालक का नाम पूछा तो उसने बताया की उसका नाम शिवा है और वह 5 साल का है उसके घर में कुल चार सदस्य हैं जिसमें उसके माता-पिता और एक बड़ी बहन है, उसके घर के सभी सदस्य अलग-अलग प्रकार के कार्य करते हैं जैसे उसकी बड़ी बहन कूड़ा-कबाड़ा चुनती है और मां कूड़ा छांटने का काम करती है। बालक स्वयं भीख मांगता है और उसके पिता नजदीकी कारखाने में मजदूरी करते हैं, बालक ने बताया कि

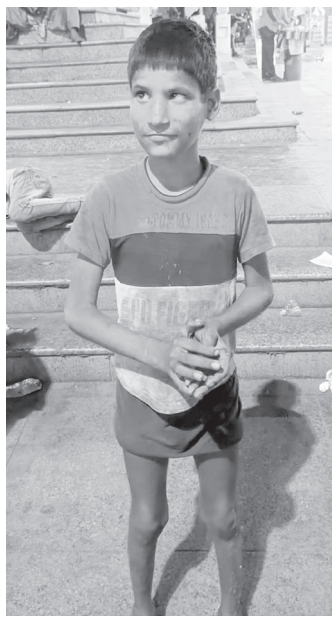

उसके पास न तो रहने के लिए घर है और न ही खाने के लिए खाना उसका भी बहुत मन करता है कि वह विद्यालय जाए लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वह स्कूल नहीं जा पाता और इसी प्रकार ही भीख मांग कर अपना गुजर-बसर करता है।

नाबालिग के साथ अपराध, अपराधी पुलिस की नजर में

बालकनामा रिपोर्टरः शबीर
बातूनी रिपोर्टरः गुलिस्ता

ऐसे देश में जहां लड़कियों को शक्ति के रूप में पूजा जाता है वहां इस प्रकार की घटना का होना हमारे सभ्य-समाज पर एक तमाचा है जो हमें यह सोचने पर मजबूर करता है की क्या देश का भविष्य वास्तव में सुरक्षित भी है? हाल ही में समाज को शर्मसार करती बलात्कार की एक घटना सामने आई जहाँ जयपुर की एक कच्ची बस्ती की बातूनी रिपोर्टर गुलिस्ता ने बताया कि कमली (परिवर्तित नाम) जो लगभग 10 वर्ष से अपनी माता के साथ अमुक बस्ती में किराए के मकान में रह रही है और मकान मालिक भी उनके पास में बने हुए दूसरे घर में रहता हैं कमली बहुत ही सरल स्वभाव की लड़की है और कक्षा 7 में पढ़ती है कमकान मालिक प्रतिदिन चाय की दुकान से बालिका से चाय मंगवाता था, बालिका की मम्मी ने इसका विरोध किया तो उसने मकान खाली करने की धमकी दे डाली। इस तरह बालिका रोज मकान मालिक को चाय लाकर देती और वह बालिका के साथ में छेड़छाड़ करता

लेकिन बच्ची ने डर के कारण किसी को नही बताया फिर एक दिन बालिका को पांच रुपये का लालच दिया और अंदर कमरे में चाय लाने को कहा फिर उसके साथ बलात्कार किया और मकान मालिक ने बालिका को धमकी दी की इसके बारे में किसी को कुछ भी नहीं बताये। बस्ती में किसी को भी कानों-कान इस बात की खबर नहीं हुई जब बालिका कुछ दिनों के बाद विद्यालय गई और वहां पर शिक्षका ने उसे उदास देखा तब वह बहुत डरी हुई थी तब शिक्षिका ने उससे पूछा तो वह रोने लगी और स्वयं के साथ हुई घटना की जानकारी अध्यापकों को बता दी इस पर विद्यालय की शिक्षिकाओं ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई और अपराधी को पुलिस के हवाले कर दिया। काश! कमली शुरूआत में की जाने वाली छेड़छाड़ पर आवाज उठा पाती तो शायद वह बलात्कार का शिकार नही होती, आज भी न जाने कितनी ही बालिकाऐं है जो की इस प्रकार की घटनाओं का शिकार हो रही है परन्तु शर्म एवं सामाजिक दबाव के कारण अपनी वेदनाओं को व्यक्त नहीं कर पाती।

सड़कों पर काम करने वाले बच्चे में पढ़ाई का जोश

बालकनामा रिपोर्टर- सरिता

ऐसे तो हमारे हरियाणा के बादशाहपुर में बहुत से सड़क एवं कामकाजी बच्चे मेहनती हैं उन्हीं में से एक सिमरन (परिवर्तित नाम) नाम की बच्ची है जो मन लगाकर पढ़ती है और विपरीत परिस्थितियों से गुजर कर अपनी पढ़ाई जारी रखती है। सिमरन की उम्र 8 वर्ष है और वो दूसरी कक्षा में पढ़ती है, अभी हाल ही में उसके मम्मी-पापा सहित सारा परिवार अपने गांव किसी की शादी में जाने वाले हैं पर सिमरन उस शादी में जाने से इनकार कर रही है ताकि उसकी पढ़ाई ना छूट जाए और उसका पाठ्यक्रम अधूरा ना रह जाए। सिमरन को पढ़ाई से इतना लगाव है कि वह एक भी दिन छुट्टी नहीं करती है और प्रतिदिन स्कूल जाती है जिस दिन सरकारी अवकाश होता है बस उसी दिन उसकी छुट्टी होती है। सिमरन ने पढ़ाई के लगाव के कारण यह तय किया है की उसके घर के बगल में ही उसकी मौसी रहती है जिसके घर पर वह रहकर अपनी पढ़ाई जारी रखेगी

और अपने माता-पिता के साथ अपने गांव नहीं जाएगी जिससे उसकी पढ़ाई में कुछ दिक्कत न आए। बालकनामा रिपोर्टर सरिता को चर्चा के दौरान मालूम हुआ की वह अपने स्कूल के बाद सीधा अपने सेंटर पर पढ़ने आती है, वह चित्रकला में भी बहुत रूचि रखती है कुल मिलाकर वह हर चीज में तेज है उसका सपना है कि वह बड़े होकर एक अधिकारी बने जिससे उसके माता-पिता को झुग्गी में ना रहना पड़े और वह अच्छे घरों में रहे और अच्छे कपड़े पहने वह अपने अध्यापकों का सारा कहना मानती है और अपना स्कूल का काम बनाकर ले जाती है और स्कूल में अनुशासन में रहती है। जब कभी स्कूल में नृत्य प्रतियोगिता होती है तो वह उसमे भी सक्रिय रूप से प्रतिभाग करती है वह स्कूल में सबसे तेज विद्यार्थी है जिसकी सराहना अक्सर वहां के शिक्षक करते है, वे कहते हैं हमें सिमरन जैसी लड़कियों पर गर्व है और जो इतनी कम उम्र में ही शिक्षा का महत्त्व समझती है और प्रतिदिन पाठशाला आती है, इसी तरहं अन्य बच्चों को भी विद्यालय प्रतिदिन आना चाहिए।

कचरे से कबाड़ बीनने को मजबूर बचपन

बालकनामा रिपोर्टरः शबीर

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने नरसिंहपुरा कांटेक्ट पॉइंट का दौरा करते वक्त रास्ते में दो बच्चों को कचरे में से प्लास्टिक के डिब्बे, कांच की बोतल एवं इसी प्रकार की अन्य चीजें इकट्ठा करते हुए देखा तो बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से उनका नाम पूछा तब बच्चों ने अपना नाम क्रमशः सपना और रोहित (परिवर्तित नाम) बताया तथा रिपोर्टर ने बच्चों से जानने का प्रयास किया की इतनी गंदगी में से कबाड़ क्यों इकट्ठा कर रहे हो?

तब बच्चों ने बताया कि हमारी माता लापता है और पिता नशा करते हैं और कोई भी काम नहीं करते बल्कि दादी के पास जो पैसे होते हैं, लड़ाई झगड़ा कर के वो भी छीन ले जाते हैं। हम दादी के पास रहते हैं और कबाड़ा इकट्ठा करके दादी को देते हैं और दादी इसे दुकान पर बेचकर आती है ऐसा करने से हमें रोज के 40 से 50 मिल जाते हैं और इन्ही पैसों से घर में खाना बनता है। बच्चों ने बहुत ही उदासीनता के साथ कहा की हमारे माता-पिता होने के बावजूद भी हम अनाथ है और अपना और दादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए कबाड़ बीनने को मजबूर है।

रेड सिग्नल पर ठहरी ट्रेन से बच्चे चुराते थे मोबाइल और पैसे

बातूनी रिपोर्टर -दिलशाद, बालकनामा रिपोर्टर- हंस कुमार (दिल्ली वेस्ट)

जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार जखिरा गये तो वहां के एक बच्चे ने बताया की उनके यहां ऐसे काफी सारे बच्चे है जो रेड सिग्नल पर रूकी ट्रेनों से मोबाईल, पैसे इत्यादि चोरी करते है। उसने बताया की यहां के बच्चे चोरी करने के साथ-साथ नशा भी करते है और कई बार रुकी हुई ट्रेन अचानक से ट्रेन चालू हो जाती है तो बच्चों को कई बार चोट भी लग जाती है। ऐसे ही कुछ समय पहले एक बच्चे का चोरी करते समय जल्दबाजी में भागते हुए पैर कट गया और इस कारण वह स्कूल भी नहीं जा सका।

वहाँ के बच्चों ने बताया की यहां हर दो-तीन दिन में ऐसे हादसे होना आम बात है वैसे इसमें बच्चों के माता-पिता का भी हाथ होता है क्योंकि वह लोग अपने बच्चो को पटरियों पर छोड़ देते है जिस कारण ट्रेन की चपेट में आने से बच्चो के साथ हादसा हो जाता है। ये बच्चे गैंग बनाकर लड़ाई-झगड़े व गलत काम भी करते है और यदि

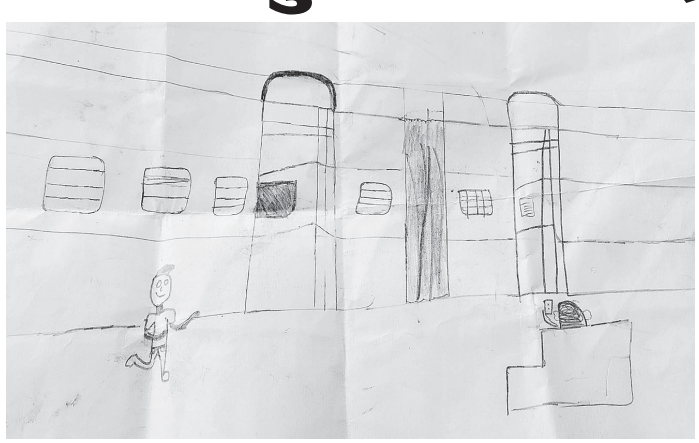

अगर कोई इसकी जानकारी उनके घर में या फिर किसी को बता देते है कि वो बच्चे चोरी करते है तो वह लोग उन्हे मिलके मारते है। बात जब बड़ो तक पहुंच जाती है तो एक घर से दूसरे घर में लड़ाई हो जाती है। इस चोरी के धन से ये बच्चे सिगरेट, बीड़ी और नशीले पदार्थ इत्यादि का सेवन करते है जिनसे उनको अलग-अलग बीमारी जैसे की कैंसर आदि का खतरा होता है उनके माता-पिता उन बच्चो को नशा करने से मना भी करते है लेकिन वह ठहरे उद्दंड बच्चे वह मानते ही नही है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

गलियों में बसे कामकाजी बच्चों का अद्भुत जीवनः खेलते हैं तमाशा, कमाते हैं रोजी

बालकनामा रिपोर्टरः शबीर

सड़क पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे कई तरह का कामकाज करके अपना पालन-पोषण करते हैं साथ ही साथ जब बच्चे तरह-तरह का काम करते हैं तो उन्हें विभिन्न कठिनाइयों से भी गुजरना पड़ता है। जब बालकनामा के पत्रकार वहीं रास्ते से निकल रहे थे तो पत्रकारों ने देखा कि कुछ बच्चे सड़क के किनारे अपने माता-पिता के साथ डीजे बजाकर तमाशा दिखा रहे थे। तमाशा खत्म होने के बाद पत्रकारों ने उन बच्चों से बात की तो बच्चों ने अपनी कहानी को बताते हुए कहा की हम तमाशा दिखाते हैं और ये ही हमारी रोजी-रोटी है। हम रोजाना अलग-अलग जगह पर तमाशा दिखाने के लिए सुबह के 9:00 बजे से निकल जाते हैं और रात के 8:00 बजे तक अलग-अलग स्थानों पर जा जाकर तमाशा दिखाते हैं। जब हम तमाशा दिखाने के लिए निकल जाते हैं तो तमाशा दिखाने के लिए बड़ी जगह भी देखनी पड़ती है कि हम इस स्थान पर तमाशा दिखाएंगे तो क्या लोग आसपास में इकट्ठे हो पाएंगे या नहीं? तो हम उन स्थानों पर जाते हैं जिन स्थानों पर सबसे ज्यादा भीड़ होती है जैसे मार्केट, स्कूल के बाहर आदि। कभी-कभी होता है कि जब हम अपना तमाशा दिखाने वाला सामान खोल रहे होते हैं और जिसकी दुकान के आगे या घर के आगे समान खोल रहे होते हैं तो वह हमें मना कर देते हैं और कहते हैं कि नहीं आप यहां से जाइए यहां तमाशा मत दिखाइए तो हम लोगों को मजबूरन वहां से जाना पड़ता है। हमारे पास तमाशा

दिखाने के लिए सुई, लोहे का सरिया, रस्सी, लोटा, डीजे आदि होता है। दो डंडे गाढ़ के रस्सी को बांधकर हम उसके ऊपर चलकर कला दिखते हैं और सर पर लोटा में पानी रखकर रस्सी पर चलकर दिखाते हैं। इसके अलावा आंख में सुई रखकर भी दिखाते हैं, सरिया को गले की नोक पर रखकर उसे मोड कर दिखाना पड़ता पर जब अलग-अलग तरीके के हम यह कार्य करते तो हर एक कार्य में अलग-अलग समस्या आती जैसे जब हम रस्सी पर खड़े होकर तमाशा दिखाते है तो कभी-कभी ऐसा भी होता कि पांव फिसल जाता और गिरने का डर रहता हैं। जब आंख में सुई रखकर खेल दिखाते हैं तो सुई आंख में चुभने का भी खतरा रहता है पर इन खतरों का सामना करना पड़ता है तब जाकर लोगों से मांगते हैं और इस प्रकार दिन भर में तीन-चार जगह खेल दिखा देते हैं और ढाई सौ से तीन सौ रुपये का काम करके घर का गुजारा चला पाते हैं।

संस्था से जुड़कर बालिका ने शिक्षा की मुख्य धारा में कदम रखा

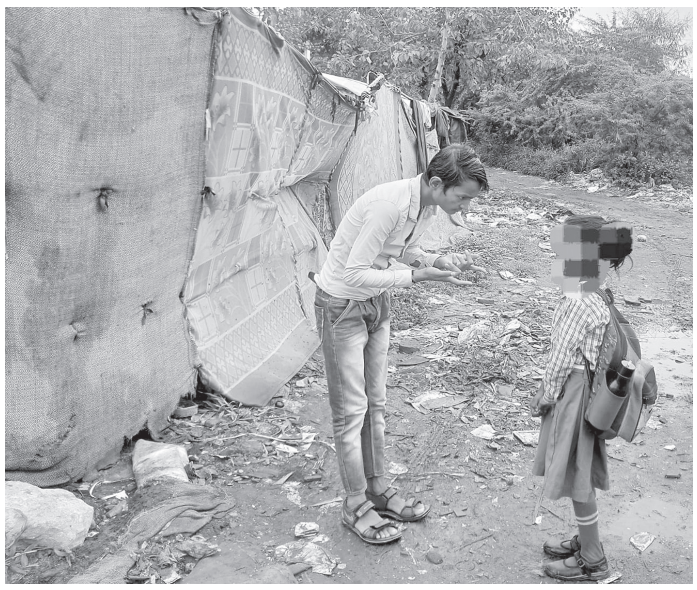

बातूनी रिपोर्टरः निशा, बालकनामा रिपोर्टरः शबीर

जैसा की अलग-अलग राज्यों में चेतना संस्था सक्रिय रूप से कार्य कर रही है जैसे राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा। चेतना संस्था मूलभूत रूप से सड़क एवं कामकाजी बच्चों की शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास पर कार्य करती है मसलन जिन बच्चों के आधार कार्ड नहीं होते उनके आधार कार्ड को पूरा करवाती और जिन बच्चों का स्कूल में दाखिला नहीं हुआ उन बच्चों को स्कूल तक पहुंचाती है। बालकनामा के पत्रकारों ने दिल्ली की बस्ती में जब पत्रकार बैठक कि तो 12 वर्ष की बालिका ने बताया कि जब मैं चेतना संस्था से नहीं जुड़ी थी तो मैं घर पर रहकर अपने घर के कामकाजों जैसे बर्तन धोना, कपड़े धोना, खाना बनाना इत्यादि कामों में उलझी रहती थी। यह सभी काम करके मेरा पूरा दिन का समय घर पर ही बीत जाता था और मैं बिल्कुल भी शिक्षा के बारे में सोच भी नहीं पाती थी। एक दिन जब मैं घर का कामकाज कर रही थी तब चेतना संस्था के कार्यकर्ता हमारे पास आये और उन्होंने हमसे कुछ सवाल किये जैसे हमारा नाम क्या है? वर्तमान में आप पढ़ाई करते हैं या नहीं? और दिनभर क्या करते हैं? जब मैंने कार्यकर्ता को बताया कि मैं वर्तमान में शिक्षा प्राप्त करने के लिए नहीं जाती हूँ क्योंकि मेरा स्कूल में नाम नहीं लिखा है और मैं दिन भर घर का काम करती रहती हूँ और इस तरह पूरा समय कामकाज करने में ही व्यतीत हो जाता है।

यह बात सुनकर कार्यकर्ता ने बालिका को बताया कि हम यहां पर बच्चों को पढ़ाते हैं और आप भी हमारे पास आया करो और हम बच्चों को अपने पास जोड़कर फिर स्कूल में भी दाखिला करवाते हैं। यह सुनकर बालिका ने कहा ठीक है मैं कल से आपके पास आऊंगी फिर बालिका रोजाना चेतना संस्था के कार्यकताओं के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाने लगी।

कुछ दिन तक कार्यकताओं ने बालिका को अपने पास ही पढ़ाया और जो बालिका को जैसे हिंदी-इंग्लिश नहीं आती थी वह धीरे-धीरे सिखाया और बालिका को स्कूल लेकर गए। और फिर स्कूल में बालिका का पहली कक्षा में दाखिला करवाया और और तब से अब तक वर्तमान में बालिका कक्षा पांचवी में शिक्षा प्राप्त कर रही है और बालिका का कहना है कि मैं पढ़-लिखकर डॉक्टर बनना चाहती हूँ।

पवन ने नशा करने की आदत से दूरी बनाई

बालकनामा रिपोर्टरः शबीर

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की एक कच्ची बस्ती का दौरा किया और वहां बस्ती में रहने वाले बालक पवन (परिवर्तित नाम) से उसकी मुलाकात हुई। बालकनामा रिपोर्टर द्वारा बालक पवन के साक्षात्कार के दौरान एक सकारात्मक खबर के बारे में ज्ञात हुआ। 13 वर्षीय बालक पवन ने साक्षात्कार के दौरान स्वयं के जीवन में आए सकारात्मक बदलाव के बारे में बताते हुए कहा की बस्ती में तीन दुकान है जहां से वह औसतन 10 से 20 रुपए का गुटखा, तंबाकू प्रतिदिन खरीद कर खा जाया करता था और जब पैसे नही होते तो घर से पैसे चुराकर और कभी-कभी तो पिताजी की जेब से भी तंबाकू चुरा कर खा जाया करता था। बालक ने बताया की एक दिन कांटेक्ट पॉइंट की दीदी ने जीवन कौशल कार्यशाला में धूम्रपान एवं नशा करने से होने वाले नुकसान के बारे में बताया की बच्चों को गुटखा नही खाना चाहिए इससे दांतों की जड़ों में गम भर जाता है, केविटी जमा होती है और कभी-कभी तो दांत भी गल जाते है यहाँ तक की मुँह का कैंसर भी हो सकता है और तभी मैंने सोच लिया था कि मैं गुटखा खाना छोड़ दूंगा लेकिन यह मेरे लिए असंभव था लेकिन अब मैंने धीरे-धीरे करके नशा करना छोड़ दिया हैं।

बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की अड़चनः एक बड़ी बाधा

बालकनामा रिपोर्टरः काजल
बातूनी रिपोर्टरः कमल

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर में एक कच्ची बस्ती का दौरा किया और वहां बच्चों से उनकी समस्याओं और उनके अनुभव को जानने का प्रयास किया तब 8 वर्षीय बालक कमल (परिवर्तित नाम) ने बताया की जब भी मैं बच्चों को सुबह अपने घर के आगे से स्कूल जाते हुए देखता हूँ तो मेरा भी बहुत मन होता है कि मैं भी स्कूल जाऊं लेकिन मेरे माता-पिता नहीं चाहते कि मैं विद्यालय जाऊं इसके बदले वे रोजाना मुझे कबाड़ इकट्ठा करने के लिए भेज देते हैं और कहते हैं कि स्कूल जाकर क्या करेगा?

कबाड़ इकट्ठा करके लाएगा तो उसे बेचकर जो पैसे मिलेंगे उससे घर के खर्च में मदद मिलेगी। कमल ने बताया की मेरे माता-पिता भी अलग-अलग जगह जाकर कबाड़ इकट्ठा करते हैं जब बालकनामा रिपोर्टर

काजल ने बालक से पूछा कि आप प्रतिदिन में कितने रुपये का कबाड़ा बेच देते हो?

तब बालक ने कहा की मैं और मेरे माता-पिता जो कबाड़ा इकट्ठा करके लाते वह घर में एक जगह इकट्ठा करते हैं और उनमें से बोतल, प्लास्टिक, कांच एवं अन्य सामान को अलग-अलग करके बेचते हैं इस प्रकार मैं लगभग रोज के 50 से 70 रुपये तक का कबाड़ा इकट्ठा कर के बेच लेता हूँ।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

जयपुर के बाजारों में कामकाजी बच्चे बेचते दिवाली का सामान

बालकनामा रिपोर्टरः शबीर

दिवाली वैसे तो हम सबके लिए खुशियों का त्यौहार है लेकिन लेकिन बच्चों में इसकी खुशी और आनंद अलग ही होता है, वहीं दूसरी और कामकाजी बच्चे जयपुर के बाजारों में रंगोली, पोस्टर, रूई, दीपक बेचते हुए नजर आ रहे हैं। यह बच्चे गरीबी के चलते ये काम करने को मजबूर हैं जब बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने बच्चों से बात की तो बालक संजय (परिवर्तित नाम) ने बताया की वह जयपुर के बाजार में सड़क किनारे अपनी छोटी बहन के साथ स्कूल की छुट्टी होने के बाद दुकान लगाकर दिवाली पर काम आने वाला सामान बेचते हैं और ज्यादा से ज्यादा सामान बेचने के लिए जोर-जोर से आवाज भी लगाते है फिर भी एक दिन में मात्र 50 की ही कमाई हो पाती है। बालक संजय ने बहुत ही उदासीनता के साथ कहा कि हम सड़क के किनारे दुकान लगाते है तो पुलिस वाले हमें वहां से भगा देते हैं इस कारण कभी-कभी तो हम मात्र 10 से 20 रुपए का ही सामान बेच पाते हैं और यहाँ हमारी तरह ही बाजार में बहुत से बच्चे दिवाली का सामान बेच रहे हैं।

शौच के लिए बाहर जाने पर मजबूर बच्चों की चिंता

रिपोर्टर- किशन

जैसे हम बच्चों से जुड़ी हर एक समस्या के विषय पर बात करते हैं पर अधिकतर समस्याओं पर ध्यान दें तो सबसे ज्यादा परेशानियों का सामना लड़कियों को करना पड़ता है। पश्चिम दिल्ली की बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात करने के दौरान बच्चों ने बताया की हमारी झुग्गी बस्ती में 3 महीने पहले शौचालय था और वर्तमान में भी शौचालय है पर वह किसी कारणवर्ष बंद हो गया है। तो आइये जानते है की यह शौचालय बंद होने का कारण क्या था? बच्चे कैसे परेशानी को झेल रहे हैं? झुग्गी बस्ती में शौचालय 3 महीने से बंद है अब बच्चे शौच करने के लिए खुले में जाने के लिए मजबूर है पर झुग्गी बस्ती में जो शौचालय स्थित है शौचालय के अंदर शौचालय में 60 सीट स्थित है पर अकेले कर्मचारियों को वह साफ करने में काफी दिक्कत होती थी और झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोग शौचालय में पानी नहीं डालकर जाते हैं। वर्तमान में शौचालय के कर्मचारियों ने शौचालय साफ करना बंद कर दिया है जिस कारण बच्चों को शौच करने के लिए बाहर जाना पड़ता है। झुग्गी

बस्ती की बालिकाओं ने बताया जब शौचालय बंद हुआ था तो हम शौच करने के लिए भरे जंगल के बीच में जाते थे पर कुछ दिन पहले जंगल को भी साफ कर दिया गया अब सबसे बड़ी समस्या है कि हम शौच करने के लिए कहां जाएं, बच्चों ने अपील किया कि हम यही चाहते हैं कि जल्द से जल्द शौचालय वाले भैया को जो भी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है वह ठीक हो जाए और शौचालय पुनः यथावत खुल जाए।

गलत संगति के कारण बच्चे कर रहे हैं चोरी और नशीले पदार्थों का सेवन

बालकनामा रिपोर्टर सरिता

जब पत्रकार ने गोगा कॉलोनी कांटेक्ट पॉइंट की विजिट की तो वहां कुछ बच्चों ने पत्रकार को बताया कि हमारी झुग्गी में कुछ बच्चे हैं जो गलत संगती में पद गए हैं। वो बच्चे स्कूल जाते समय रास्ते में रुककर गटर का पाइप, रिंग चोरी करके बेचते हैं। उसे बेचकर जो पैसे आते हैं उससे वह नशा करते हैं। ये बच्चे घर पर स्कूल जाने का बोलकर जाते हैं, लेकिन स्कूल नहीं जाते हैं। वो रास्ते में चोरी और नशा करते हैं। इस काम में लगभग 3 से 4 बच्चे शामिल हैं और इनकी उम्र 10 से 12 वर्ष के बीच में है। जहां से यह लोग रिंग चोरी करते हैं वहां बहुत सारे रिटाय रिंग पड़े हुए हैं और वहां पर बहुत गंदगी भी है। फिर भी यह बच्चे उस गंदगी में जाकर उस रिंग को उठाकर बेच देते हैं। एक बार कुछ बच्चों ने उन्हें रिंग चोरी करते हुए देख लिया और उसके बारे में हमारी चेतना एनजीओ की मैडम को बताया। हमारी मैम उन बच्चों से बात करने गई और समझाया कि आप लोग यहां पर चोरी करने मत जाना। क्योंकि यह जिसकी जमीन है वह आप सभी को मार भी सकते हैं। गंदे रिंग को छूने से उन बच्चों उन बच्चों को हाथ में इन्फेक्शन भी हो गया और उनके हाथ में बहुत सारी फुंसी हो गयी है। हमारी मैम के समझाने से वह बच्चे अब पहले की तरह चोरी करने नहीं जाते हैं, बल्कि स्कूल जाते हैं। वह स्कूल में मन लगाकर पढ़ते हैं और स्कूल से आकर फिर चेतना एनजीओ सेंटर पर बच्चे पढ़ने आते हैं।

बच्चे करते है स्कूल में झगड़ा और बीच बचाव करने पर शिक्षक को गलती से लगा घाव

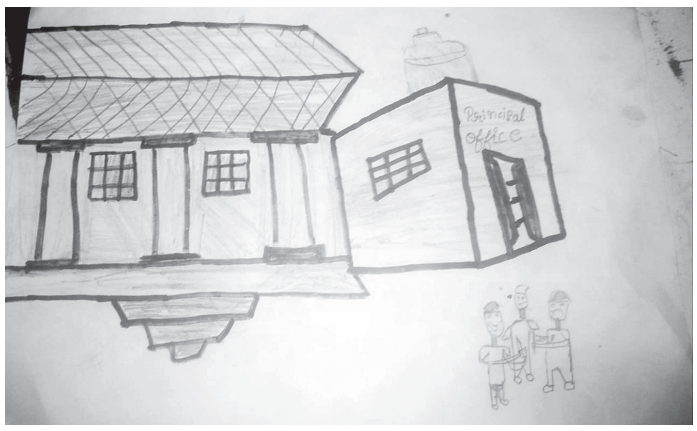

बातूनी रिपोर्टर -दिलशाद,
बालकनामा रिपोर्टर- हंस कुमार

जखिरा के कुछ बच्चे धारदार हथियार लेकर स्कूल जाते है। वहाँ के एक बच्चे ने बताया कि तीन अक्टूबर को स्कूल गये थे तो छुट्टी के समय कुछ बच्चों में किसी बात को लेकर आपसी झगड़ा हो गया था, वह सभी बच्चे लगभग 16 साल के होंगे और उनमे से एक बच्चे ने बोला कि उसके पास बहुत धारदार चाकू है दूसरे लड़के ने बोला की तेरे पास चाकू है तो मेरे पास भी तुझसे बड़ी चाकू है जिससे तेरी जान निकल जायेगी।

उसी बहस में एक लड़के ने चाकू चला दिया तो दूसरे लडके के हाथ में चाकू लग गया और उसने भी जवाबी हमले में चाकू चलाने कि कोशिश की तो बच्चा बच गया। उस लड़के ने दुबारा से चाकू चला दिया दूसरा बच्चा फिर बच गया। तो इस प्रकार चाकू चलता देख स्कूल के पी टी के शिक्षक आये और बच्चो का झगड़ा रोकने की कोशिश की लेकिन उनमें से एक लड़के ने चाकू चला दिया जो सीधे जाकर पी टी के टीचर के चेहरे पे लग गया और वो घायल हो गए।

दूसरे शिक्षक फौरन उन बच्चो को रोकने गये लेकिन वह बच्चे तब तक वहाँ से भाग गये थे और थोड़ी दूर जाकर वह फिर से आपस में झगड़ने लगे। वहां मौजूद बच्चो ने देखा कि झगड़ा करने वाले बच्चे कह रहे थे कि मैं तुम्हारे घर में घुसकर मारुंगा उसी तरह से बहस बढ़ती गयी, वह बच्चे अपने दोस्तो को बुलाने लगे और झगड़ा और बढ़ता गया झगड़े में चाकू और पत्थर चलने लगे झगड़े में काफी सारे बच्चे घायल हो गये। वहाँ मौजूद बच्चों ने बताया कि वहाँ अक्सर ऐसा झगड़ा होता ही रहता है झगड़ा करने वालो के माता-पिता उन्हे मना भी नही करते है परिणामतः बच्चे बिगड़ते जा रहे है।

दिवाली की चमक पड़ी फीकी, पटाखे के बारूद से बिगड़ी बच्चे की शकल

बातूनी रिपोर्टर- जोहेब अंसारी

भले ही बढ़ते प्रदूषण के कारण दिल्ली में पटाखों को बैन कर दिया गया है परंतु इसके बावजूद भी दिल्ली में दिवाली की पूरी रात आतिशबाजी की गई जिससे न केवल दिल्ली में प्रदूषण का स्तर बिगड़ा बल्कि नेहरू कैंप में रहने वाले एक बच्चे सोनू (परिवर्तित नाम) जिसकी उम्र केवल 8 वर्ष है उसी के भाई ने खेल-खेल में उसके ऊपर पटाखे में भरने वाला बारूद फेंक दिया जिससे बच्चे का पूरा चेहरा झुलस गया इसका असर सोनू की जिंदगी पर ऐसे हुआ कि सोनू अब आईने में अपना मुंह देखने से भी डरता है और ना ही किसी से बात करता है। फिलहाल सोनू की स्थिति गंभीर है और वह अस्पताल में भर्ती है, इसी के साथ नेहरू कैंप में रहने वाली 12 वर्षीय बच्ची ज्योति (परिवर्तित नाम) जो की चेतना संस्था के ही एक सेंटर पर पढ़ने के लिए आती है दिवाली की रात अपने दोस्तों के साथ बम जला रही थी इसी बीच उसी में से एक बम ज्योति के हाथ में फट गया जिससे ज्योति के हाथ को काफी नुकसान हुआ। अभी ज्योति के हाथ पर प्लास्टर बँधा है और वह काफी दुखी है दोनों ही घटनाओं से कमला नेहरू कैंप के बच्चे काफी डरे हुए हैं और उन्होंने भविष्य में कभी भी बम ना जलाने के लिए शपथ ली है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

जिसका कोई नहीं होता है उसका खुदा होता है

ब्यूरो रिपोर्ट

कहते हैं अपने ही कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो व्यक्ति में दिमाग की हालत खराब होने के कारण उसका अधिकतर फायदा उठाते हैं चाहे वह किसी भी प्रकार से हो जैसे काम निकलवाना, उसकी परेशानी को ना देखना आदि। हम यहाँ एक ऐसी बालिका की बात करने जा रहे हैं जो जयपुर की एक बस्ती में रहती है, जब बालकनामा पत्रकार उस बालिका से मिले एवं उसकी स्थिति को जाना तब बालिका ने अपनी कहानी को बताते हुए कहा की मैं वर्तमान में 14 साल की हूँ और जयपुर की झुग्गी बस्ती में अपने दादा-दादी के पास रहती हूँ पर अब आप यह सोच रहे होंगे कि मैं अपने दादा-दादी के पास रहती हूँ पर क्यों? दरअसल वर्तमान में मेरी माता जी नहीं हैं उनकी मृत्यु हो चुकी है। मेरी माता जी की मृत्यु होने के बाद पिताजी ने कुछ साल तक मुझे अपने पास रखा पर कुछ साल बाद पिताजी ने एक दूसरी शादी कर ली और शादी करने से पहले मैं पिताजी के साथ खुश थी चाहे मैं दो रोटी कम खाती थी पर वह परेशानी में सहन कर लेती थी पर जब पिताजी की शादी हो गई तो जो महिला आई वह कुछ दिन तक मुझे अपने पास रखी पर मैं उन्हें आंटी ही कह के पुकारती थी वह मुझे बार-बार कहती कि आप मुझे माँ कहा करो पर जब मैं अपनी असली माँ को जानती हूँ जिसने मुझे जन्म दिया और उनकी मेरे सामने मृत्यु हो गई पर मैंने अपनी माँ को तो देखा है ना तो अंदर से दिल गवाही नहीं देता था की मैं इन आंटी को माँ कहूं जिस कारण यह बात

आंटी ने पिताजी को बताई पिताजी ने भी मुझसे उन्हें माँ कहने को कहा पर तब भी मेरा दिल गवाही नहीं दिया फिर पिताजी ने कुछ दिन बाद दादा और दादी के पास छोड़ दिया पर उस समय मुझे काफी बुरा लगा और मैं इस बात को लेकर काफी सोचने लगी जब मैं दादा दादी के पास रहने लगी तो मैंने सोचा कि दादा-दादी मुझे अच्छे से रखेंगे और पढ़ाये लिखाएंगे पर माता जी की मृत्यु होने के बाद पिताजी ने अलग कर दिया और मैं हर समय कुछ ना कुछ सोचती रहती थी। जिस कारण दादा दादी सोचते थे कि इसकी दिमाग की हालत काफी कमजोर है यह दिमाग से पागल हो चुकी है इस कारण वह मेरा अधिक फायदा उठाते थे स्कूल ना भेज कर वह मुझे कोठी में काम करने के लिए भेजते थे पर में कोठी में जाती बर्तन धोना, खाना बनाना आदि कार्य करती पर जो मेरा सपना था पर वह अभी तक पूरा नहीं हुआ कि मैं अच्छा पढ़ लिख लूं पर कहते हैं ना जिसका कोई नहीं उसका ऊपर वाला जरूर होता है जिस मैडम के यहां मैं वर्तमान में काम करती हूं वह काफी पढ़ी लिखी हैं और उन्हें मैंने अपनी कहानी बताई तो उन्होंने यह सारी बात सुनकर मुझसे कहा कि आप ऐसा कुछ कार्य मत करना जिससे आपके परिजनों को दिक्कत आए पर मैं चाहती हूं कि मैं इन्हें अच्छे से अच्छा जवाब दूं वह भी शिक्षा प्राप्त करने के बाद। मैं जब जब काम पर जाती हूं तो जल्द से जल्द काम खत्म करके मेरी मैडम मुझे पढ़ाती भी है और जब मैडम काम पर चली जाती है तब मुझे उनके बालक भी पढ़ने में सहायता करते हैं और इस प्रकार मेरे जीवन में थोड़ी खुशी आ रही है अब मैं पढ़ लिख कर आगे बढ़ूंगी और जिन-जिन ने मुझे धोखा दिया है मैं उन्हें अपनी शिक्षा के दम पर कड़ा जवाब दूंगी।

दिवाली पर खुशी के बजाय गम

बालकनामा रिपोर्टर: शबीर,
बातूनी रिपोर्टर: अमित

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों से दिवाली के त्यौहार के बारे में उनके अनुभव जानने का प्रयास किया तब बच्चों ने बताया की दिवाली का त्यौहार बहुत अच्छा लगता है लेकिन इस त्यौहार पर हमें बहुत सी परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है जैसे पटाखों का कचरा हमारी झोपड़ियों के अंदर आ जाता है जिससे आग लगने का खतरा रहता है इसके अलावा पटाखों की आवाज से हमें सोने में भी परेशानी आती है। इसके पश्चात बातूनी रिपोर्टर अमित ने बहुत ही उदासीनता के साथ बताया कि इस दिवाली पर हमें खुशी से ज्यादा गम था क्योंकि मेरा दोस्त संजय (परिवर्तित नाम) जिसके पास पटाखे खरीदने के पैसे भी नही थे बस वह दूसरो को पटाखे जलाते हुए देखकर खुश हो रहा था इसी बीच कुछ दूरी पर किसी ने पटाखे के ऊपर बाल्टी रखकर फोड़ दिया जिससे लगभग 10-15 मीटर दूर खड़े संजय के पैर पर गर्म जलती हुई बाल्टी का टुकड़ा आ पड़ा जिससे संजय के पैर में बहुत बड़ा चीरा लग गया। आसपास बाइक न होने के कारण बैटरी रिक्शा के माध्यम से नजदीकी अस्पताल में बालक का इलाज करवाया जहाँ बालक के पैर में चार टांके आये और इस तरह दिवाली का खुशियों भरा माहौल गम में बदल गया।

दोनों आंखों से देखने की क्षमता कैसे खो गई?

बातूनी रिपोर्टर रानी बालकनामा रिपोर्टरः शबीर

क्या कभी आप ने सड़क पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से उनकी इच्छा जानी है? सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अंदर आगे बढ़ने का काफी जुनून होता है पर आखिरकार यह जुनून क्यों दब जाता है? पत्रकारों ने जयपुर की कुछ झुग्गी बस्तियों में दौरा किया तो एक ऐसी बालिका से मिले जिसे आंखों से बिल्कुल नहीं दिखाई देता पर वह बोलने में इतनी होशियार है कि जैसे मशीन हो। पत्रकारों ने उस बालिका से और बालिका के माता-पिता से भी बात की तो पता चला कि वह क्यों नहीं देख पाती है।

दरअसल बालिका वर्तमान में 10 वर्ष की है और वो किराए की झुग्गी में रहती हैं, बालिका का जब जन्म हुआ तो वह एक आँख से नहीं देख पाती थी फलतः एक आँख से ही पूरी दुनिया को देख पाती थी पर जब बालिका दिन पर दिन बड़ी होती चली गई तो बालिका के माता-पिता ने बालिका का स्कूल में दाखिला करवा दिया और वह एक कक्षा से लेकर तीन कक्षा तक सफलतापूर्वक शिक्षा प्राप्त करती रही फिर एक दिन जब वह रास्ते से निकल रही थी तो वहां गाड़ी का काफी जाम लगा हुआ था और बालिका धीरे-धीरे रास्ते से आ रही थी पर जब बालिका अपनी गली

के लिए मुड़ी तो सामने से काफी रफ्तार में एक साइकिल आ रही थी और उसने आकर बालिका को मार दिया फिर क्या था साइकिल वाले का हैंडल बालिका की आँख पर लग गया और उसी आँख पर लगा जिस आँख से वह बालिका देख पाती थी। जैसे ही साइकिल का हैंडल बालिका की आँख पर लगा तो बालिका की आँख काफी लाल हो गई और आँख से पानी गिरने लगा उस समय बालिका के साथ कोई नहीं था पर जब साइकिल वाले से बालिका का एक्सीडेंट हुआ तो कुछ लोगों ने देखा और उस बालिका को उठाया फिर उस साइकिल वाले को डांटा और मारा तो वह वहां से भाग गया।

बालिका घर पहुंची और सारी कहानी माताजी और पिताजी को बताई फिर पिताजी बालिका को तुरंत पास के डॉक्टर के पास लेकर गए और डॉक्टर को भी सारी कहानी बताई फिर बालिका की आँखे देखकर डॉक्टर ने कहा कि यह ज्यादा गंभीर मामला है आप बड़े अस्पताल में ले जाओ और इसका ऑपरेशन करवाओ। यह सुनकर पिताजी काफी चिंतित हो गए और तुरंत बड़े अस्पताल लेकर पहुंचे और वहां पर बालिका की आँख का ऑपरेशन करवाया पर नियति का दुर्भाग्य देखिये ऑपरेशन करने के बाद आँख से जो दिखता था वह भी दिखाना बंद हो गया क्योंकि साइकिल का हैंडल का जो ब्रेक लगाने वाला होता है वह आँख में ज्यादा चला गया और उस कारण बालिका अब वर्तमान में अपनी दोनों आँखों से नहीं देख पाती है।

बच्चों का अपहरण कर उनसे भिक्षावृत्ति व बाल मजदूरी करवाने दिल्ली लाते है अंतर्राज्यीय गिरोह

बातूनी रिपोर्टर-आदिल, रिपोर्टर-हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंसराज दिल्ली के शकूर बस्ती क्षेत्र में विजिट करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर आदिल ने बताया कि चौदह वर्षीय जफर (परिवर्तित नाम) शकूर बस्ती में रहता है, वो और उसके साथी एक दिन पंजाबी बाग सेंट्रल मार्केट गए थे तो उनकी निगाह वहां एक बच्चे की ओर गई जिसकी उम्र लगभग नौ वर्ष थी, वह बच्चा मार्केट में भीख मांग रहा था और रो भी रहा था। सामान खरीदते समय उन्होंने देखा की उस बच्चे को कोई भी भीख नही दे रहा था जिससे वह बच्चा काफी परेशान नजर आ रहा था। थोड़ी देर बाद वह बच्चा एक व्यक्ति के पास गया और अपना सारा पैसा उसे दे दिया। पैसे कम होने के कारण उस व्यक्ति को बहुत तेज गुस्सा आ गया और उसने बच्चे को जोर से धक्का दे दिया जिससे बच्चा सीधे सड़क पर एक गाड़ी के सामने जाकर गिर गया। बाजार में भीड़ अत्यधिक होने के कारण गाड़ियां धीमी गति से चल रही थी जिस कारण ड्राइवर ने सूझबूझ का परिचय देते हुए सही समय पर ब्रेक लगा दिया जिससे वह बच्चा बाल-बाल बच गया। यह दृश्य देखकर जफर और उसके साथियों से रहा नहीं गया उन्होंने जाकर उस बच्चे को उठाया और उस आदमी से पूछा की तुमने इस बच्चे को धक्का क्यों दिया? उस आदमी ने बोला की ये मेरा बच्चा है, मैं इसे मारुं, गाली दूँ, भीख मंगवाऊं तुम्हे इससे क्या मतलब? तो वह बच्चा तुरंत हमसे बोला की, भैया ये झूठ बोल रहे है ये मेरा पिता नही है बल्कि ये प्रलोभन देकर उसका अपहरण करके दिल्ली ले आया है। यह सुनकर जफर के एक साथी को गुस्सा आ गया और उसने उस अपहरणकर्ता व्यक्ति को एक थप्पड़ मार दिया तो वह व्यक्ति भी उसे मारने लगा फिर जफर और उसके बाकी साथी भी मिलकर उसे मारने लगे। यह देखकर वहां काफी भीड़ जमा हो गई। लोगों ने उनसे झगड़े का कारण पूछा तो कलई खुल गई, भीड़ में से एक व्यक्ति ने पुलिस को फोन लगाकर घटना की जानकारी दी। थोड़े समय में वहाँ पुलिस पर आ गई। पुलिस ने उस व्यक्ति को हिरासत में ले लिया, बच्चे ने पुलिस को बताया की उस व्यक्ति (अपहरणकर्ता) ने उसके जैसे अनेक बच्चो को पैसों का लालच देकर उनका अपहरण कर दिल्ली ले आया है। फिर पुलिस ने बच्चे से पूछा की तुम्हारा घर कहाँ है? तो उस बच्चे ने बताया की वो हरियाणा का रहने वाला है फिर उन्होंने पूछा की हरियाणा में जिला या गांव कौन सा है? उस बच्चे को अपने जिले या गांव का नाम नही पता था लेकिन उसने बताया की उसे अपने पिता का मोबाइल नंबर पता है, पुलिस ने बच्चे से नंबर लेकर उसके पिता को फोन किया और बोला की उनका खोया हुआ बच्चा दिल्ली के पंजाबी बाग पुलिस थाने में दिल्ली पुलिस के पास सुरक्षित है आप आकर उसे ले जा सकते है फिर उस बच्चे के पिता दिल्ली आकर अपने बच्चे को सकुशल अपने साथ ले गये।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

अब मैं भी स्कूल जा पाऊंगी

बातूनी रिपोर्टर माया व बालकनामा रिपोर्टर काजल

हमारे छोटे-बड़े सपने हमारे जीवन में बड़ी अहमियत रखते है क्योंकि ये हमें अभिप्रेरित करते है तथा अपने लक्ष्यों की और अग्रसर भी करते है किन्तु केवल सपना देखना ही काफी नहीं है इसके लिए काफी मेहनत और अथक प्रयास भी करने पड़ते है तब ही जाकर सपने सच हो पाते है। सपनों को सच करने में कुछ ना कुछ ऐसी परेशानियाँ भी आ जाती है जिस का हम हल ही नहीं कर पाते या हल करने की कोशिश करते हैं पर दूसरे लोग हमारा नाजायज फायदा उठाते हैं। बातूनी रिपोर्ट माया के हवाले बंजारा बस्ती में रह रही अंजली (परिवर्तित नाम) ने बताया की मैं वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ झुग्गी में रहती हूँ और मैं घर पर रहकर घर का घरेलू कामकाज में ही उलझी रहती हूँ जैसे घर में खाना बनाना, बर्तन धोना, पोछा लगाना एवं छोटे बहन-भाई को संभालना आदि। वर्तमान में मैं स्कूल भी नहीं जाती हूँ क्योंकि मेरे पास ऐसा कोई दस्तावेज ही नहीं है जिससे मेरा स्कूल में दाखिला हो पाए। एक बार मैं अपनी माताजी के साथ पास के स्कूल में पहुंची और हमने वहां पर अध्यापिका से बात की तो अध्यापिका ने जब दस्तावेज मांगे तो मेरे पास कोई प्रूफ नहीं था उन्होंने कहा कि आप कोई प्रूफ लेकर आए हम आपका दाखिला कर लेंगे पर जब हम घर पर पहुंचे तो हमने दस्तावेज बनवाने में काफी कोशिश की पर जिस भी जगह या जिस भी दुकान पर जाते वह इतने पैसे मांगते कि हम सोचेंगे भी तो इतने पैसे कैसे इकट्ठे कर पाएंगे? जैसे हम तीन से चार दुकान पर पहुंचे कोई 12000 रुपए मांगता, कोई 14000 और कोई 15000 रुपए मांगता पर इतना पैसा सुनकर हम तुरंत इनकार कर देते। अन्तः में हम उदास होकर वापस घर लौट आये और फिर वही अपनी जिंदगी जीने लगे पर एक दिन जब मैं घर पर काम कर रही थी तो एक चेतना संस्था से दीदी आई। दीदी ने मुझसे पूछा कि आप स्कूल नहीं जाते? पर मैंने उन्हें बताया कि मैं स्कूल जाना तो चाहती हूँ पर मेरा कोई दस्तावेज नहीं है यद्यपि मैंने बनवाने की कोशिश की पर इसके लिए इतना पैसा मांगते हैं कि हम दे नहीं सकते। बालिका को संस्था की कार्यकर्ता ने बताया हम उन बच्चों पर ही कार्य करते हैं जिनके स्कूल जाने में कोई परेशानी आ रही हो और उनका स्कूल में दाखिला करवाते है। यह बात सुनकर मैं काफी खुश हुई और फिर कार्यकर्ता को हमने कहा कि हम आपसे जुड़ना चाहेंगे फिर उन्होंने अपने सेंटर में हमारा नाम लिख लिया और वर्तमान में हमारे दस्तावेज बनने का कार्य चल रहा है पर पहले जितना पैसा मांगा जाता था अब उतना पैसा नहीं मांग रहे हैं। हम उन लोगों के पास जाते थे जो अपनी ही छोटी सी दुकान खोलकर आधार कार्ड बनाना शुरू कर देते हैं पहले हमें जानकारी का भी अभाव था कि हम कहां पर जाएं जिससे हमारा आसानी से कम हो जाए पर कार्यकर्ता ने हमारा आधार कार्ड बनवा रही हैं जो आधार कार्ड बनाते हैं और कम से कम पैसे लेते हैं अब मैं इस बात से खुश हूँ की अंततः में विद्यालय जा पाऊँगी।

गलत संगत ने छुड़वाया स्कूल

ब्यूरो रिपोर्ट

यह बात शायद आप जानते होंगे यदि बच्चा शैतानी और लड़ाई-झगड़ा या गाली-गलौज जैसे कार्य करता है तो सबसे पहले गलती माता-पिता की मानी जाती है पर जब बच्चा बड़ा होता चला जाता है तो वह और बिगड़ता चला जाता है। दिल्ली में रह रहे दिव्यकांत (परिवर्तित नाम) की उम्र 14 वर्ष है। अब वर्तमान में दिव्यकांत अपने भैया के साथ कबाड़ा बीनने का काम करता है और वर्तमान में वह स्कूल भी नहीं जाता है, अब हम आपको यह बताएंगे की दिव्यकांत का स्कूल कैसे छूटा? आखिरकार वह बिगड़ता क्यों चला गया और अपने भाई के साथ काम पर क्यों लग गया? वो कहते है ना की एक न एक दिन संगत का असर जरूर पड़ता है, दिव्यकांत जब 5 वर्ष का था तब से दिव्यकांत का स्कूल में दाखिला करवाया गया और वह रोजाना स्कूल जाता पर माता-पिता के कामकाज पर चले जाने के कारण वे दिव्यकांत पर ज्यादा अच्छे से ध्यान नहीं दे पाते थेऔर पास का इलाका इतना खतरनाक था कि आसपास के लोग एवं बच्चे काफी गंदी-गंदी गालियों का प्रयोग करते थे जब दिव्यकांत सुबह से स्कूल चला जाता और दोपहर तक स्कूल से वापस लौट कर आता तो वह अपने दोस्तों के साथ खेलने के लिए निकल जाता पर आपस में खेल-खेल में दिव्यकांत और दिव्याकांत के दोस्त एक दूसरे के लिए गंदी-गंदी गालियों का प्रयोग करते थे जिसके कारण दिव्यकांत भी सीखता चला गया। दिव्याकांत के माता-पिता ने दिव्यकांत पर अच्छे से ध्यान नहीं दे पाए। जैसे-जैसे वह बड़ा होता चला गया फिर दिव्यकांत की स्कूल से शिकायत आई कि वह दिन पर दिन अब पढ़ने में भी कमजोर होता जा रहा है और लड़ाई झगड़ा और बच्चों को मारना एवं गाली गलौज करता है। यह बात सुनकर पिताजी ने दिव्यकांत को काफी समझाया और एक बार और मौका दिया कि अब वह ऐसा ना करें वरना उसे स्कूल से निकाल कर काम पर लगा देंगे पर कुछ महीनों तक वह ठीक रहा फिर वह दोबारा यह हरकतें करने लगा फिर पेरेंट्स मीटिंग के दौरान दिव्याकांत के पेरेंट्स को बुलाया गया और फिर शिकायत की तो दिव्यकांत के पिताजी ने उस समय आठवीं कक्षा से उसका नाम कटवा दिया और दिव्यकांत का बड़ा भाई जो कबाड़ा बीनने का काम करता था उसके साथ कबाड़ा बीनने के लिए लगा दिया। अब दिव्यकांत कबाड़ा बीनना और छाँटने का काम करता है और जो पैसे कमाता है उन पैसों से अब वह नशा भी करता है।

बच्चों ने प्रदूषण से बचाव के लिए रैली निकाली, मास्क पहनने का संदेश दिया

रिपोर्टर- सरिता

सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने मिलकर प्रदूषण के विरुद्ध जन जागरूकता हेतु सभी सेंटर से भव्य रैली निकाली जिसमें सभी बच्चों ने नारा वाला पोस्टर अपने हाथों में लिया और सभी बच्चे जोर-जोर से नारा लगाते हुए ह्लप्रदूषण को दूर भगाना है, मास्क जरूर लगाना हैह्व अपने सेंटर के आसपास के सभी लोगों को जागरूक किया एवं सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बताया की मास्क हमारे लिए कितना जरूरी है और मास्क लगाने से हम कैसे प्रदूषण से बच सकते हैं और अपनी सुरक्षा कर सकते हैं उसके बाद सभी बच्चे अपने गली से बाहर दूसरे गली में जाकर यही नारा लगाया और सभी को मास्क लगाने की सलाह दी। कुछ बच्चों ने दुकानदारों से भी बोला कि आप अपने दुकान में मास्क लगाकर दुकान में बैठोगे तो आप पॉल्यूशन से बच सकते हैं जिससे आपको बीमारी नहीं होगी दुकानदारों ने बोला आपकी यह बात हमें बहुत अच्छी लगी। आप सभी बच्चे बहुत समझदार हैं सभी बच्चों को बहुत मजा आया और अच्छा लगा, बड़े-बड़े लोगों को समझाया कि हमें मास्क लगाना चाहिये और जब भी घर से निकले मास्क लगाकर ही निकले। अब एक ही नारा है सभी बच्चों को मिल कर प्रदूषण को दूर भगाना है और खाने से पहले हाथ धोना है स्वच्छ भोजन और स्वच्छ पीना है बीमारी को दूर भगाना है।

चप्पलों को रंगने से बच्चों की जेब में आता है खर्चा घर

बातूनी रिपोर्टर समीर, रिपोर्टर किशन

पत्रकारों ने अभी तक झुग्गी बस्तीयों में एवं सड़क पर रहने वाले बच्चों पर ध्यान दिया तो अधिकतर झुग्गी बस्तीयों में बच्चे फैक्ट्री में से समान लेकर आते या समान उनके पास फैक्ट्री के लोग देने आते और फिर वह तरह-तरह के काम करते। पत्रकारों ने एक बस्ती में दौरा किया जिस दौरान पत्रकारों को एक ही काम करते हुए काफी लोग नजर आए और वही काम कुछ बच्चे भी कर रहे थे। पत्रकारों ने उन बच्चों के पास बैठकर उस काम के बारे में जानकारी प्राप्त की तो 12 वर्ष की बालिका सविता (परिवर्तित नाम) ने विस्तार से बताते हुए कहा। हम दिल्ली की बस्ती में लगभग 5 वर्ष से रह रहे हैं हमारे घर में आठ सदस्य हैं चार बहन, दो भाई और माता-पिता, पिता और एक भाई रिक्शा चलाते हैं और माता जी और हम चप्पल के फीते का काम करते हैं। मैं वर्तमान में कक्षा 6 में शिक्षा प्राप्त करने के लिए रोजाना स्कूल जाती हूँ और मेरे भाई बहन भी रोजाना स्कूल जाते हैं। माता जी घर पर ही रहती हैं और फीते रंगने का काम करती है। हम सुबह के 8:00 बजे से स्कूल चले जाते और दोपहर के 2:00 बजे तक स्कूल से वापस लौट कर आते हैं। स्कूल से आने के बाद खाना खाकर और थोड़ा सा आराम करके फिर हम चप्पल के फीते रंगने का काम करते हैं। जैसे हम कई तरह-तरह की चप्पल पहनते हैं वैसे ही तरह-तरह के फीते होते हैं जिन्हें रंगना, तोड़ना, गड्डी लगाना, आदि करना पड़ता है। पहले फैक्ट्री से काम आता है, फैक्ट्री में काम करने वाले कार्यकर्ता चप्पल के फीते झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोगों को देकर जाते हैं उनमें कई तरह-तरह के काम करने पड़ते हैं कुछ फीतो में रंग से रंगना पड़ता है, कुछ फीते बोरी में इकट्ठे होकर आते हैं उन्हें 12, 12, 24, 24, की गड्डी लगाकर एक करना पड़ता है। जब फैक्ट्री से बोरी में चप्पल के फीते आते हैं तो उन फीतो में से काफी बदबू आती है। क्योंकि वह काफी गंदी प्लास्टिक से बने हुए होते हैं। कुछ फीतो में रंग रंगना पड़ता है जैसे काला, सफेद आदि। वह रंग फैक्ट्री से ही दिए जाते हैं पर जब हम फीते रंग रहे होते हैं तो उनमें से काफी बदबू आती है अधिकतर लोगों से सहन नहीं किया जाता इसके कारण अधिकतर बच्चे एवं बड़े बीमार भी पड़ जाते हैं तरह-तरह की समस्याएं उठती हैं जैसे सांस लेने में दिक्कत, सीने में दर्द, खांसी आदि। जब फैक्ट्री से फीते आते हैं तो उन फीतो को समय के अनुसार कार्य करके देना पड़ता है तब जाकर पूरा पैसा मिलता है यदि लेट करते हैं तो कुछ पैसे काट भी दिए जाते हैं। 24 फीते रंगने के बाद 2 मिलते हैं और दिन भर में 120 रुपए तक का काम कर लेते हैं जिस घर का खर्च चलता है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471